International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.4 No.15 Mar-Apr 2023

भूमंडलीकरण और मीडिया का महत्व

डॉ. सुजाता जगन्नाथ रगडे
हिन्दी विभाग
मिलिंद कला महाविद्यालय, नागसेनवन, औरंगाबाद
Corresponding Author- डॉ. सुजाता जगन्नाथ रगडे

प्रस्तावना :- भूमंडलीकरण वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था को जग की अर्थव्यवस्था के साथ एकरूप होना है। भूमंडलीकरण वस्तुओं, व्यक्तियों, सेवाओं और सूचनाओं का राष्ट्रीय सीमाओं के बाहर अलग रूप से संचरण ही भूमंडलीकरण कहलाता है। भूमंडलीकरण का दूसरा नाम वैश्विकरण है। सन १९९१ में भारत में नई आर्थिक नीती अपनायी गई जिससे भूमंडलीकरण की शुरुवात हुई है। भूमंडलीकरण का मतलब विभिन्न देशों के बाजारों में बेचे जानेवाली वस्तुओं के एकीकरण के माध्यम से होता है। भूमंडलीकरण के माध्यम से पूरे देश में परस्पर सहयोग और समन्वय से बाजार के रूप में कार्य करने की शक्ति को प्रोत्साहन मिलता हुआ दिखाई देता है। भूमंडलीकरण के महत्व को अंधोरेखांकित करने का प्रयास २०वी शताब्दी के अंतिम दशक में किया गया था। इसके माध्यम से 'विश्वग्राम' की अवधारणा का जन्म हुआ है। भारत में भूमंडलीकरण का युग विश्व व्यापार संघटन और गैट करार के बाद अधिक तेजी से बढ्ने लगा था। वास्तव में भूमंडलीकरण का संबंध व्यापार की प्रक्रिया से रहा है। वर्तमान में पूरी दुनिया एक गाँव की संकल्पना से परिवर्तित हुई है। भूमंडलीकरण के माध्यम से आर्थिक उदारीकरण, निजीकरण का विकास हुआ है साथ ही नये-नये क्षेत्रों के भी दरवाजे जैसे खुलते हुए दिखाई देते है – इनमें इंटरनेट प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, इलेक्ट्रानिक मीडिया, विज्ञापन, ई- बैकिंग आदि का विस्तार हुआ है। भूमंडलीकरणने आर्थिक क्षेत्र में जैसे प्रगति की है, वैसे ही सामाजिक, शैक्षिक, राजनीतिक, साहित्य, संस्कृति में भी हमारी निजी जिंदगी को प्रभावित करने में अहं भूमिका निभाई है ।

भूमंडलीकरण की परिभाषा :-

प्रो. के. मनस्वी के मतानुसार "उदारीकरण, आर्थिक विकास एवं निजीकरण के सामंजस्य की विश्वस्तरीय प्रक्रिया को भूमंडलीकरण कहते हैं।"१

भूमंडलीकरण का अर्थ :-

'भूमंडलीकरण' का पर्यायवाची शब्द 'वैश्विकरण' है जिसे अंग्रेजी में 'Globalization' कहा जाता है। 'भूमंडलीकरण' शब्द का अर्थ हैं- 'भू' का मतलब 'भूमी' है और 'मंडलीकरण' का अर्थ –'समाहित करना' रहा है। "भूमंडलीकरण" की प्रक्रिया व्यापार विषयक नियमों की वैश्विक एकता के लिए लायी गयी है, जो विश्व के लोग, कंपनियाँ तथा विविध राष्ट्रो की सरकारों को एक ही व्यापार विषयक नियमावली में बांधने का कार्य करती है। उत्पाद, विचार, दुष्टिकोण तथा अन्य सांस्कृतिक आयामों का यह एक साझा मंच है। यह आर्थिक परिवेश का अन्तर्राष्ट्रीय संजाल है। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में एकीकरण भूमंडलीकरण कहलाता है। भूमंडलीकरण विविध राष्ट्रो के लोगों, कंपनियों तथा सरकारों के एकत्रीकरण की प्रक्रिया है, ऐसी प्रक्रिया जो अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार तथा निवेशद्वारा चलायी जाती है और सूचना प्रौद्योगिकी से पोषित होती है। इस प्रक्रिया का परिणाम पर्यावरण, संस्कृति, राजनीतिक व्यवस्था, आर्थिक विकास तथा तरक्की और विश्वभर के मनुष्य के सामाजिक कल्याण पर होता है।" २

भूमंडलीकरण का सर्वाधिक आघात सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, पारिवारिक तथा आत्मीय संबंधों पर हुआ है। यही नही कुछ पहलूओं को प्रभावित भी किया है वह मानव जीवन के मूल्य है जिसमें धर्म, साहित्य, समाज, संस्कृति, राजनीति, व्यक्ति और विचार रहे है। "भूमंडलीकरण" दुष्प्रभावों को लेकर समस्त देशों का साहित्य चिंतित है। विशेषत: तीसरी दुनिया के विकसनशील राष्ट्रो के साहित्य में अमीरी-गरीबी के बीच की बढती खाई और मनुष्यता को छिनने की पीडा गहराई से अभिव्यक्त हुई है।"३ भूमंडलीकरण के कारण ही हिन्दी साहित्य पूरे वैश्विक स्तर पर छाया हुआ दिखाई देता है। इसे समझने और जानने के लिए विदेशी लोग हिन्दी भाषा का अध्ययन करते हुए दिखाई देते है। भूमंडलीकरण में

कहीं सकारात्मकता है तो कहीं नकारत्मकता भी दिखाई देती है।

भूमंडलीकरण ने समाज, साहित्य और संस्कृति को कुछ मात्रा में बर्बाद करने का भी प्रयास किया है । इस संदर्भ में कुमुद शर्मा लिखती है कि, "भूमंडलिय मीडिया का उभार सहज और स्वाभाविक स्थितियों की देन नही है । बल्कि भूमंडलीय मीडिया के उभार की राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक पृष्ठभूमी है । भारतीय परिप्रेक्ष्य में भूमंडलीय मीडिया के प्रवेश के पीछे भूमंडलीकरण के वाहको की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।"४ भूमंडलीकरण से हिन्दी साहित्य भी अछूता नही रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी ने हिन्दी भाषा का भी विश्व स्तर पर अप्रत्यक्ष रूप में प्रचार-प्रसार किया है। साहित्य में भी कई प्रकार के बदलाव आये है साथ ही विद्वानो तथा लेखकों के विचारों में बदलाव आते हुये दिखाई देते है। हिन्दी साहित्य पर भूमंडलीकरण के कारण जो असर पडा है उसका अंतर हमें पुरातन हिन्दी साहित्य भूमंडलीकरण के समय के साथ आधुनिक समय के साहित्य पर भी दिखाई देता है। साहित्यकार हमेशा ही अपने अनुभवों के माध्यम से समझने के लिए कल्पना और आदर्शवाद का सहारा लेते हुए सामाजिकता का चित्रण करते है। समाज की बिखरी हुई ईकाइयों को एक जगह पर लाने का कार्य साहित्य करता है। साहित्यकार समाज के हित में कार्य करता है। साहित्य में समाज के सौन्दर्य की तरह कुरूपता का भी चित्रण मिलता है।

मीडिया :-

मीडिया का सामान्य अर्थ 'संचार माध्यम' होता है। मीडिया एक परिपूर्ण संप्रेषण का माध्यम है, जिसमें जनसंचार माध्यम जैसे- नाटक, सिनेमा, पत्रकारिता का समावेश किया जाता है, लेकिन साहित्य के सिवाय मीडिया कुछ नही कर सकता है। साहित्य निर्माण है, तो पत्रकारिता एक हुनर, शिल्प और कौशल है। साहित्य को अपने प्रभाव के कारण महत्ता प्राप्त होती है जबकि मीडिया के अंश में खास गंभीरता रहती है। साहित्य में अनुभवों की संवेदना होती है तो मीडिया में अपने अनुभवों को सूचना का माध्यम बनाया जाता है। साहित्य के कारण चीजों को देखने की, समझने की दृष्टि विकसित होती है, साथ ही मीडिया मोहक अंदाज में विकसित होता है।

आज मीडिया बहुत सशक्त माध्यम है। मीडिया का कार्यक्षेत्र सूचनाओ को उपलब्ध कराना नही है बल्कि प्रबल जनमत निर्माण करने का सशक्त माध्यम या साधन है। समाज को सही दिशा देने का कार्य मीडिया कर रहा है। मीडिया के सशक्तिकरण के पीछे सबसे बडा योगदान साहित्य का रहा है। मीडिया का आधार,विचार , घटनाये, सूचनाएँ एवं भाषा रहे है और इन्ही तत्वों पर साहित्य का निर्माण होता हुआ दिखाई देता है।

परिभाषा :-

"मीडिया का कुछ विषयों पर जनता की राय बनाने में एक बडा प्रभाव होता है। कई मामलो में, मीडिया एकमात्र स्त्रोत है जिस पर आम जनता समाचारों के लिए निर्भर है। जब नील आर्मस्टोंग १९६९ में चंद्रमा पर उतरा, तो जन मीडिया ने इस ऐतिहासिक घटना को जनता के लिए देखना संभव बनाया।"५

"संचार के दो या दो से अधिक साधनों को सामूहिक रूप से 'मीडिया' कहा जाता है।"

'मीडिया' शब्द को समाज में सामान्य संचार के तरीकों या चैनलों में से एक के रूप में परिभाषित किया गया है जिसके माध्यम से समाचार, मनोरंजन, शिक्षा. डाटा या प्रचार संदेश फैल रहा है। वर्तमान में भूमंडलीकरण में मीडिया का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। मीडिया किसी भी व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण रही है।

मीडिया का अर्थ :-

मीडिया का अर्थ 'मीडिया' शब्द अंग्रेजी के 'मीडियम' का बहुवचन है जिसका अर्थ माध्यम होता है। 'मीडिया' शब्द संचार के साधनों रेडियो, टेलिविजन, समाचार-पत्र आदि के लिए इस संज्ञा का प्रयोग किया जाता है। 'मीडिया' का अर्थ तकनिक है जिसका उद्देश दर्शकों तक बडे पैमाने पर संदेश पहुंचांना है। यह संचार का प्राथमिक माध्यम है जो सामान्य जनता के विशाल बहुमत तक पहुंचाता है। सबसे सामान्य साधन सामूहिक मीडिया के लिए समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, रेडियो, टेलिविजन और इंटरनेट रहा है।

भूमंडलीकरण में समाज के दर्पण के रूप में साहित्य भी मीडिया का ही माध्यम रहा है। जो व्यापक संप्रेषण करता है, सूचनाओ का। समाज में मीडिया की भूमिका अहम होती है। "जब मीडिया की शक्ति एवं लोकमानस पर उसकी पकड को पहचानते हुए महान लोगों ने उसका उपयोग लोक-परिवर्तन के अहिंसक, प्रभाव्षली और भरोसेमंद हथियार के रूप में किया है।"६ साहित्य और मीडिया में मीडिया अधिक जटिल और व्यापक रहा है क्योंकि उसका असर दूरगामी होता है। भूमंडलीकरण के कारण मीडिया का विकास होता हुआ दिखाई देता है। मीडिया के अलग-अलग प्रकार है जिसमें इलेक्ट्रोंनिक मीडिया में रेडियो, टेलिवीजन, इंटरनेट आदि में हिन्दी साहित्य का वैश्विक या भूमंडलीकरण का स्वरूप दिखाई देता है। हिन्दी साहित्य को विश्वभर में कम्प्युटर और विज्ञापन के माध्यम से पहुंचाया गया है। हिन्दी साहित्य का भूमंडलीकरण में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

मीडिया के कारण सबसे अधिक हिन्दी साहित्य का प्रचार-प्रसार हो रहा है। इलेक्ट्रोंनिक मीडिया के साथ प्रिंट मीडिया को भी हिन्दी साहित्य में अपनाकर हिन्दी साहित्य मजबूत और सामर्थ्यशील हो गया है। हिन्दी साहित्य के कारण ही दुनिया पर हिन्दी का प्रभाव बडी मात्रा में दिखाई देता है। भूमंडलीकरण के कारण विज्ञापन और अनुवाद की बढती हुई मांग के कारण हिन्दी साहित्य का प्रचार-प्रसार बढता हुआ दिखाई देता है। इसके कारण आंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी साहित्य का प्रभाव दिखाई देता है।

हिन्दी साहित्य क्षेत्र में उपन्यास, नाटक, संस्मरण, कहानी, जीवनी, कविता आदि विधाओं के माध्यम से रचनाकार अपनी बात समाज तक पहुंचाने का काम करता है। हिन्दी साहित्य आदि काल, भक्ति काल, रीतिकाल तथा आधुनिक काल को लेकर चलता है। हर काल की अपनी विशेषता हैं, अपनी रचनाएँ है। साहित्यकार की कलम पूरे जग को अपने भीतर समा सकती है यही नही अगर वह साहित्यिक धारा आधुनिक परंपरा की हो तो उसका प्रारंभ जन से लेकर विश्व तक सतत रचनाओ में दिखाई देता है। क्योंकि साहित्यकार की रचनाओ में सभी विषय समाहित होते है। इस दृष्टिकोण के कारण ही समाज में फैली विसंगतियों का विरोध किया जा सकता तथा उसे एक सूत्र में बांधकर भूमंडलीकरण के सकारात्मक पक्ष को आधुनिक हिन्दी साहित्य में प्रस्तुत किया जा सकता है।

हिन्दी साहित्य का एक अलग संसार है। हिन्दी साहित्य सदा जीवंत रहता है क्योंकि वे काल सापेक्ष होता है। इसका उत्तम उदाहरण सूर, कबीर, तुलसी,रहीम आदि का संपूर्ण साहित्य रहा है। इनके द्वारा रचित साहित्य वर्तमान में भी लोगों को प्रेरणा देने का स्त्रोत रहा है। इस पूरी एवं अमूल्य धरोहर को मीडिया ने ही संजोकर रखा है। हिन्दी साहित्य विशेषकर गद्य साहित्य के विकास में देश के विभिन्न भागों से प्रकाशित हो रही पत्र-पत्रिकाओ के माध्यम से साहित्य में नवजागरण हुआ है इसे हिन्दी साहित्य के आचार्य शुक्लजी ने भी स्वीकार किया है। भारतेन्दू युग के बाद से ही हिन्दी पत्रकारिता (मीडिया) में साहित्य एवं साहित्यकरों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है तथा प्रोत्साहन मिला है। मीडिया की आवश्यकता दिन-ब-दिन बढती हुई दिखाई देती है इसमें कथा, कहानी, दर्शन और विज्ञान साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

वर्तमान में नया लेखन मंच स्थापित हो रहा है जिसमें हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओ को सोशल मीडिया पर प्रकाशित किया जा सके। जिसके कारण लोगों में पढने का रूझान बढ रहा है जिससे साहित्य में समृद्धि बढ रही है और बढने में सहायक हो रही है। मीडिया लेखन में अनगिनत संभावनाएँ रहती है फिर वह मीडिया मुद्रित हो, श्रव्य हो या फिर दृक- श्रव्य ही क्यों ना हो ? इंटरनेट के कारण दुनिया पूरी तरह सीमित सी हो गई है। विभिन्न वेबसाईटों के माध्यम से साहित्य को विस्तारित करने के प्रयास शुरू हुए है। समाज में किसी भी प्रकार का बदलाव आया तो साहित्यकार अपने साहित्य में उस प्रकार के बदलाव का चित्रण करता है। आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल एवं भारतेन्दू युग में साहित्य का संबंध धर्म, चरित्र, प्रेम, सौदर्यात्मकता, भक्ति, अलंकार आदि से रहा था। जिसके कारण आधुनिक काल तक उनकी रचनाएँ ग्रंन्थों की कोटि में स्वीकार की जाने लगी है इतना ही नही आज भी वह रचनाएँ प्रासंगिक रही है।

निष्कर्ष :-

आदिकाल, भक्तिकाल तथा रीतिकाल की बहुतांश रचनाएँ पदयात्मक रूप में रही है। रीतिकाल में वातावरण के अनुसार साहित्य में थोडा अंतर दिखाई देता है लेकिन अलंकारो, छंदो, भावार्थो आदि में प्रयोगात्मक विवरण दिखाई देता है। आधुनिकीकरण की वजह से खुली कविताएँ, कहानिया, लयमुक्त दोहे, उपन्यास में शब्दों की कमी है। साहित्यकार अथवा लेखक की सोच साहित्य के मूल में विघ्न पडने से हुई है। हम कह सकते है, भूमंडलीकरण और मीडिया का महत्व साहित्य में अमूल्य रहा है। भूमंडलीकरण की संकल्पना को विस्तारित करने का कार्य मीडिया के माध्यम से होने में मदत मिली है। भूमंडलीकरण के माध्यम से साहित्य को नई पहचान, नई संकल्पना प्राप्त हुई है। कुछ नये विषयों के मार्ग खुल गये है। यह विषय केवल भारत तक सीमित नही है बल्कि मीडिया के कारण वे विश्वव्यापी बन गये है। साहित्य बंदिस्त न होकर अब राष्ट्रीय, अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र के में खुल गये है और इसका मुख्य कारण मीडिया ही रहा है। मीडिया एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाने में क्षणो में मदत करता हुआ दिखाई देता है।

संदर्भ :-

१) भूमंडलीकरण का अर्थ, परिभाषा – बांडे -२५/१२/२०२०

२) www.gobalization.- 101

3) डॉ. सिंह पुष्पपाल, भूमंडलीकरण और हिन्दी उपन्यास, पृ. ७३

४) स्वाधींनता शारदीय विशेषांक, २००७, कोलकाता, पृ. ११९

५) परिहार, कालूराम मीडिया के सामाजिक सरोकार,अनामिका पब्लिशर्स दरियागंज नई दिल्ली, प्रथम संस्करण , पृ.२२

६) ओमप्रकाश कश्यप, मीडिया और हिन्दी साहित्य, २२ दिसम्बर २००९